क्या आज्ञाकारिता विधिवादिता है?

अमेज़िंग फ़ैक्ट्स
अध्ययन संदर्शिका

14

लोग अक्सर महसूस करते हैं कि मामूली यातायात कानून का उल्लंघन या शायद उनके करों पर “थोड़ा सा” धोखा देना ठीक है, परन्तु परमेश्वर और उसकी व्यवस्था बहुत अलग तरीक़े से काम करती हैं। हम जो कुछ भी करते हैं परमेश्वर उसे देखता है, जो कुछ भी हम कहते हैं, उसे सुनता है, और वह वास्तव में परवाह करता है कि हम उसकी व्यवस्था के साथ कैसे व्यवहार करते हैं। जबकि परमेश्वर हमारे पापों के लिए क्षमा प्रदान करता है, इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर के नियम को तोड़ने के नतीजे नहीं हैं। आश्चर्यजनक रूप से, कुछ मसीही कहते हैं कि परमेश्वर के नियमों का पालन करने का कोई भी प्रयास विधिवादिता है। यद्यपि यीशु ने कहा कि यदि आप वास्तव में परमेश्वर से प्यार करते हैं, तो आप वह करेंगे जो वह कहता है। तो, क्या आज्ञाकारिता वास्तव में विधिवादिता है? इस अध्ययन संदर्शिका को ध्यान से पढ़ने के लिए समय निकालें। अनन्त परिणाम दाँव पर है!

1 क्या परमेश्वर वास्तव में आपको व्यक्तिगत रूप से देखता है और ध्यान देता है?

“तू वह परमेश्वर है जो देखता है” (उत्पत्ति 16:13)। “हे यहोवा, तू ने मुझे जाँचकर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। तू ... मेरे पूरे चालचलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो” (भजन संहिता 139:1-4)। “तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं” (लूका 12:7)।

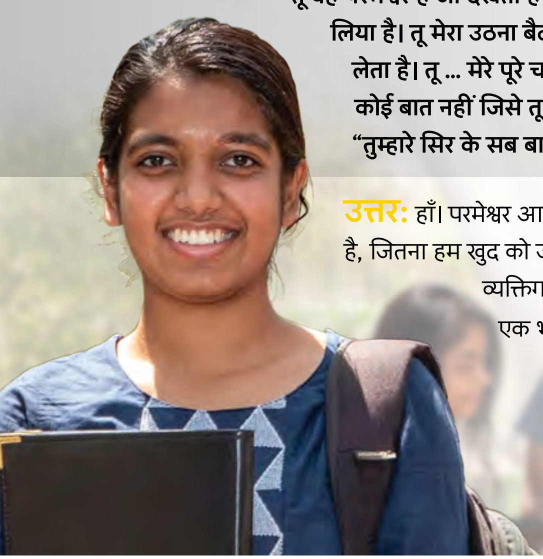

उत्तर: हाँ। परमेश्वर आपको और इस पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति को जानता है, जितना हम खुद को जानते हैं, उससे अधिक जानता है। वह हर इंसान में व्यक्तिगत रुचि लेता है और जो कुछ भी करता है उसे देखता है। एक भी शब्द, विचार, या कार्य उससे छुपा नहीं है।

2 क्या कोई भी उसके वचन का पालन किए बिना उसके राज्य में बचाया जा सकता है?

"जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21)। "यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर" (मत्ती 19:17)। "और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रानियों 5:9)।

उत्तर: नहीं। इस पर पवित्रशास्त्र बहुत स्पष्ट है। उद्धार और स्वर्ग का राज्य उन लोगों के लिए है जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं। परमेश्वर उन लोगों के लिए अनन्त जीवन का वादा नहीं करता है जो केवल विश्वास का ढोंग करते हैं या कलीसिया के सदस्य हैं या बपतिस्मा लेते हैं, बल्कि उन लोगों के लिए जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं जो पवित्रशास्त्र में दी गयी हैं। निसंदेह, यह आज्ञाकारिता केवल मसीह के माध्यम से संभव है (प्रेरितों के काम 4:12)।

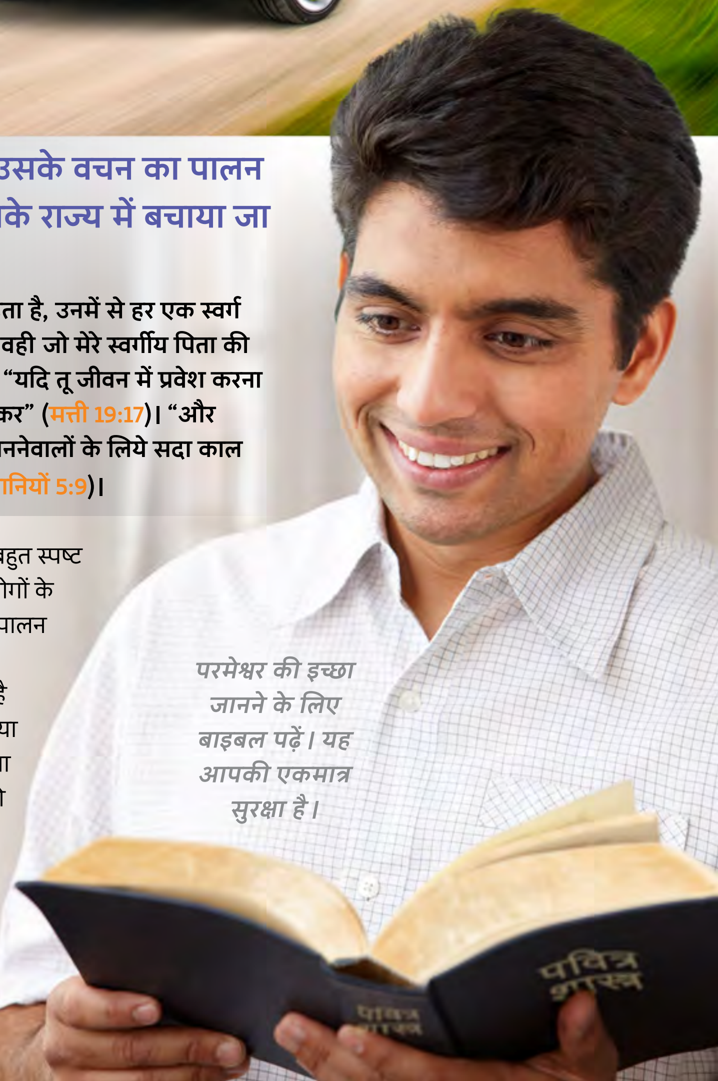

परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबल पढ़ें। यह आपकी एकमात्र सुरक्षा है।

3 परमेश्वर आज्ञाकारिता की अपेक्षा क्यों रखते हैं? यह जरूरी क्यों है?

“क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है;और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं” (मत्ती 7:14)। “परन्तु जो मेरा अपराध करता है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है; जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं” (नीतिवचन 8:36)। “यहोवा ने हमें ये सब विधियाँ पालन करने की आज्ञा दी, इसलिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हम को जीवित रखे, जैसा कि आज के दिन है” (व्यवस्थाविवरण 6:24)।

उत्तर: क्योंकि केवल एक ही रास्ता परमेश्वर के राज्य की ओर जाता है। सभी सड़कें एक ही स्थान पर नहीं ले जाती हैं। बाइबल वह नक्शा है - सभी निर्देशों, चेतावनियों और उस राज्य तक सुरक्षित रूप से कैसे पहुँचें इस बारे में जानकारी के साथ एक दिशानिर्देशिका है। इसमें से किसी भी तथ्य की उपेक्षा हमें परमेश्वर और उसके राज्य से दूर ले जाती है। परमेश्वर का ब्रह्मांड नियम और व्यवस्था का है - जिसमें प्राकृतिक, नैतिक, और आध्यात्मिक शामिल है। इनमें से किसी भी नियम को तोड़ने के निश्चित परिणाम हैं। यदि बाइबल नहीं दी गयी होती, तो लोगों को परीक्षण और त्रुटि द्वारा कभी न कभी पता चलता कि बाइबल के महान सिद्धांत मौजूद हैं और सत्य हैं। अनदेखी करने का परिणाम हर प्रकार की बीमारी, पीड़ा, और दुःख है। इस प्रकार, बाइबल के शब्द केवल सलाह नहीं हैं कि हम बिना किसी परिणाम के स्वीकार या अनदेखा कर सकते हैं। बाइबल यह भी बताती है कि ये परिणाम क्या हैं और विवरण करती है कि उनसे कैसे बचें। एक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार नहीं जी सकता है और फिर भी यीशु जैसा बने – जिस तरह से एक मिस्त्री नक़्शे की अनदेखी करे, बिना कठिनाई के घर नहीं बना सकता है। इसलिए परमेश्वर चाहता है कि आप पवित्र शास्त्र के नक्शे पर चलें। उसके जैसा बनने का कोई और तरीका नहीं है, ताकि आप स्वर्ग के राज्य में जगह पाएँ। सच्ची खुशी पाने का और कोई तरीका नहीं है।

4 परमेश्वर आज्ञालंघन को क्यों जारी रहने देता है? पाप और पापियों को अभी क्यों नष्ट नहीं करता है?

"हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इनके विषय में यह भविष्यद्वाणी की, "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया कि सबका न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के सब कामों के विषय में जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किए हैं, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही हैं, दोषी ठहराए।" (यहूदा 1:14, 15)। "प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी" (रोमियों 14:11)।

उत्तर: परमेश्वर पाप को तब तक नष्ट नहीं करेगा जब तक हर कोई उसके न्याय, प्रेम और दया से पूरी तरह आश्वस्त न हो। अंत में सभी को यह एहसास होगा कि आज्ञाकारिता माँगकर परमेश्वर, हमारी इच्छा को बल देने की कोशिश नहीं कर रहा है, बल्कि हमें खुद को चोट पहुँचाने और नष्ट होने से रोकने की कोशिश कर रहा है। पाप की समस्या तब तक नहीं सुलझेगी जब तक कि सबसे क्रूर, कठोर पापी परमेश्वर के प्रेम से आश्वस्त नहीं हो जाते है और स्वीकार नहीं कर लेते कि परमेश्वर सत्य है। शायद, कुछ लोगों को समझाने के लिए एक बड़ी आपति की आवश्यकता पड़ेगी, लेकिन पापपूर्ण जीवन के भयानक परिणाम अंततः सभी को यह विश्वास दिलाएँगे कि परमेश्वर सत्य है और सही है।

5 क्या आज्ञा का उल्लंघन करने वाला वास्तव में नष्ट होगा?

"परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें" (2 पतरस 2:4)। "सब दुष्टों का सत्यनाश करता है" (भजन सहिंता 145:20)। "जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा" (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)।

उत्तर: हाँ। शैतान और उसके स्वर्गदूतों सहित सभी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले नष्ट हो जाएँगे। चूँकि यह सच है, इसलिए निश्चित रूप से सही या गलत के बारे में सभी प्रकार की अस्पष्टता को त्यागने का यही समय है। इसलिए हमारे सही और गलत के बारे में अपने विचारों और भावनाओं पर निर्भर होना सुरक्षित नहीं है। हमारी एकमात्र सुरक्षा परमेश्वर के वचन पर निर्भर होना है। (पाप के विनाश के विवरण के लिए अध्ययन संदर्शिका 11 देखें और यीशु के दूसरे आगमन की जानकारी के लिए अध्ययन संदर्शिका 8 देखें।)

जो लोग मसीह का अनुसरण करना नहीं चुनेंगे वे अंततः उन पापों से नष्ट हो जाएंगे जिन्हें वे प्यार करते हैं।

6 आप परमेश्वर को खुश करना चाहते हैं, परन्तु क्या उसकी सभी आज्ञाओं को मानना वास्तव में संभव है?

"माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा" (मत्ती 7:7)। "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो" (2 तीमुथियुस 2:15)। "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ" (यूहन्ना 7:17)। "मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे" (भजन संहिता 18:44)।

उत्तर: परमेश्वर आपको गलतियाँ करने से बचाकर रखने का वादा करता है और आपको सारी सच्चाई के पास सुरक्षित रूप से अगवाई करेगा यदि आप (1) मार्गदर्शन के लिए ईमानदारी से प्रार्थना करेंगे, (2)निष्ठा से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें, और (3) जैसे ही आपको सत्य दिखाया जाता है, उसका पालन करेंगे।

7 क्या परमेश्वर, लोगों को बाइबल की उन सच्चाई की आज्ञा उल्लंघन करने के लिए दोषी मानता है, जिन्हें कभी उन्हें स्पष्ट नहीं किया गया है?

"यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठहरते; परन्तु अब कहते हो कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है" (यूहन्ना 9:41)। "जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है" (याकूब 4:17)। "मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई; तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिये मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊँगा। इसलिये कि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है, मैं भी तेरे बाल-बच्चों को छोड़ दूँगा" (होशे 4:6)। "ढूँढ़ो तो तुम पाओगे" (मत्ती 7:7)।

उत्तर: यदि आपके पास बाइबल की किसी सच्चाई को सीखने का कोई मौका नहीं है, तो परमेश्वर आपको इसके लिए उत्तरदायी नहीं ठहराता है। बाइबल सिखाती है कि आप ज्योति (सही के ज्ञान)के लिए परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार हैं। परन्तु उसकी दया के साथ लापरवाह न बनें! कुछ लोग अध्ययन, तलाश, सीखने और सुनने के लिए अस्वीकार या उसकी उपेक्षा करते हैं और वे नष्ट हो जाएँगे क्योंकि उन्होंने "ज्ञान को ठुकरा दिया है।" इन महत्वपूर्ण मामलों में शुतुरमुर्ग की तरह सिर छुपाना घातक है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम परिश्रमपूर्वक सच्चाई को खोजें।

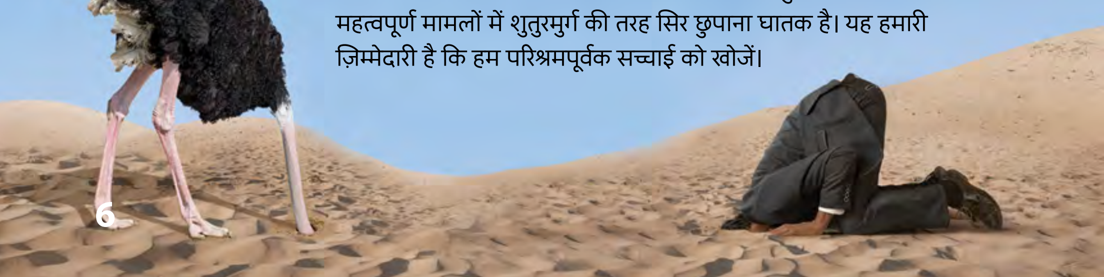

8 परन्तु परमेश्वर आज्ञाकारिता के प्रत्येक विवरण पर विस्तृत नहीं है, क्या है?

“नि:सन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आए हैं... वे उस देश को देखने न पाएँगे... क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिये; परन्तु यपुन्ने कनजी का पुत्र कालेब, और नून का पुत्र यहोशू, ये दोनों जो मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिये हैं ये उसे देखने पाएँगे” (गिनती 32:11, 12)। “मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा” (मत्ती 4:4)। “जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो” (यूहन्ना 15:14)।

उत्तर: वास्तव में-वह विस्तृत है। पुराने नियम के समय में परमेश्वर के लोगों ने इस बात को कठिन परिस्तिथियों से गुज़र कर सीखा। जो प्रतिज्ञा किए गए देश के लिए मिस्र छोड़ चुके थे, वे संख्या में एक बड़ी भीड़ थी। इस समूह में, केवल दो, कालेब और यहोशू ने पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया, और अकेले कनान में प्रवेश किया। अन्य लोगों की मृत्यु जंगल में हो गई। यीशु ने कहा कि हमें बाइबल के “प्रत्येक वचन” के द्वारा जीना है। एक भी आज्ञा बहुत अधिक नहीं है या कोई भी आज्ञा बहुत कम नहीं, वे सभी महत्वपूर्ण हैं!

9 जब एक व्यक्ति नई सच्चाई को खोजता है, तो क्या उसे सच्चाई को गले लगाने से पहले तब तक इंतजार नहीं करना चाहिए जब तक कि सभी बाधाएं न हट जाए?

“जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे” (यूहन्ना 12:35)। “मैंने तेरी आज्ञाओं को मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है” (भजन सहिंता 119:60)। “पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी” (मत्ती 6:33)।

उत्तर: नहीं। एक बार जब आप बाइबल की सच्चाई पर स्पष्ट हो जाते हैं, तो इंतजार करना कभी अच्छा नहीं होता है। टालमटोल एक खतरनाक जाल है। ऐसा इंतजार करना हानिकारक नहीं लगता, लेकिन बाइबल सिखाती है कि जब कोई व्यक्ति ज्योति मिलने पर तुरंत कार्य नहीं करता है, तो वह जल्द ही अँधेरे में चला जाता है। हमारे खड़े रहकर प्रतीक्षा करने से आज्ञाकारिता की बाधाएं हट नहीं जाती हैं; इसके बजाए, आमतौर पर इनके आकार में वृद्धि होती है। मनुष्य परमेश्वर से कहता है, “रास्ता खोलिये, और मैं आगे बढ़ूँगा” लेकिन परमेश्वर का रास्ता विपरीत है। वह कहता है, “आप आगे बढ़े, और मैं रास्ता खोलूँगा।”

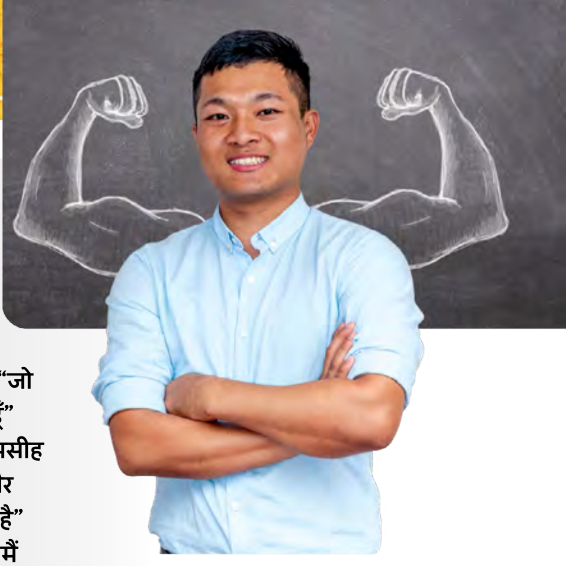

10 लेकिन क्या पूर्ण आज्ञाकारिता एक मनुष्य के लिए असंभवता नहीं है?

“परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है” (मत्ती 19:26)। “जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ” (फिलिप्पियों 4:13)। “परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है” (2 कुरिन्थियों 2:14)। “जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते” (यूहन्ना 15:5)। “यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो” (यशायाह 1:19)।

उत्तर: हम में से कोई भी अपनी शक्ति से पालन नहीं कर सकता है, लेकिन मसीह के द्वारा हम कर सकते हैं और हमें करना भी चाहिए। शैतान ने परमेश्वर के अनुरोधों को अनुचित साबित करने के लिए, इस झूठ का आविष्कार किया कि आज्ञाकारिता असंभव है।

11 किसी ऐसे व्यक्ति के साथ क्या होगा जो जानबूझकर आज्ञा उल्लंघन में लिप्त रहेगा?

“सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा” (इब्रानियों 10:26, 27)। “जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है” (यूहन्ना 12:35)।

उत्तर: बाइबल संदेह के लिए कोई जगह नहीं छोड़ती है। उत्तर गंभीर है, परन्तु सच है। जब कोई व्यक्ति जानबूझकर ज्योति को अस्वीकार करता है और आज्ञा उल्लंघन में रहता है, तो ज्योति अंततः बुझ जाती है, और वह संपूर्ण अंधेरे में छोड़ दिया जाता है। जो व्यक्ति सत्य को अस्वीकार करता तो उसे विश्वास करने के लिए “एक भटका देनेवाली समर्थ” प्राप्त होती है कि झूठ सच है (2 थिस्सलुनिकियों 2:11)। जब ऐसा होता है, तो वह खो जाता है।

12 क्या प्रेम आज्ञाकारिता से अधिक महत्वपूर्ण नहीं?

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा... जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता'" (यूहन्ना 14:23, 24)। "क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएँ कठिन नहीं" (1 यूहन्ना 5:3)।

उत्तर: बिलकुल भी नहीं! वास्तव में बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर के लिए सच्चे प्रेम का अस्तित्व आज्ञाकारिता के बिना नहीं है। न ही परमेश्वर के लिए प्यार और प्रशंसा के बिना एक व्यक्ति वास्तव में आज्ञाकारी हो सकता है। कोई बच्चा पूरी तरह से अपने माता-पिता की आज्ञाओं का पालन नहीं करेगा जब तक कि वह उन्हें प्यार न करे, और न ही वह अपने माता-पिता को प्रेम जताएगा यदि वह आज्ञा नहीं मानता। सच्चा प्रेम और आज्ञाकारिता जुड़े हुए जुड़वा बच्चों की तरह हैं। अलग होने पर, वे मर जाते हैं।

13 परन्तु क्या मसीह में सच्ची स्वतंत्रता हमें आज्ञाकारिता से मुक्त नहीं करती है?

"यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे ... सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। ... जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है" (यूहन्ना 8:31, 32, 34)। "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे अब मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके साँचे में ढाले गए थे, और पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए" (रोमियों 6:17, 18)। "तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार, सदा सर्वदा चलता रहूँगा; और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा करूँगा, क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है" (भजन सहिंता 119:44, 45)।

उत्तर: नहीं। सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ है "पाप से" (रोमियों 6:18), या आज्ञा उल्लंघन जो परमेश्वर के नियमों को तोड़ना है (1 यूहन्ना 3:4)। इसलिए, सच्ची स्वतंत्रता केवल आज्ञाकारिता से आती है। व्यवस्था का पालन करने वाले नागरिक स्वतंत्र हैं। आज्ञा उल्लंघन करने वाले पकड़े जाते हैं और अपनी आजादी खो देते हैं। आज्ञाकारिता के बिना स्वतंत्रता एक झूठी आजादी है - यह भ्रम और अव्यवस्था की ओर ले जाती है। मसीही आजादी का अर्थ आज्ञा उल्लंघन से स्वतंत्रता है। आज्ञा उल्लंघन हमेशा किसी व्यक्ति को चोट पहुँचाती है और शैतान की क्रूर दासता में ले जाती है।

14 जब मुझे विश्वास है कि परमेश्वर एक निश्चित चीज़ की अपेक्षा करता है, तो क्या मुझे बिना यह समझे की वह इसकी अपेक्षा क्यों करता है, आज्ञा माननी चाहिए?

"यहोवा की बात समझकर मान ले तब तेरा भला होगा, और तेरा प्राण बचेगा" (यिर्मयाह 38:20)। "जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है" (नीतिवचन 28:26)। "यहोवा की शरण लेनी, मनुष्य पर भरोसा रखने से बेहतर है" (भजन संहिता 118:8)। "मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है" (यशायाह 55:9)। "आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! "प्रभु की बुद्धि को किसने जाना?" (रोमियों 11:33, 34)। "उनको ऐसे पथों से चलाऊँगा जिन्हें वे नहीं जानते" (यशायाह 42:16)। "तू मझे जीवन की रास्ता दिखाएगा" (भजन सहिंता 16:11)।

उत्तर: निश्चित रूप से! हमें कुछ चीज़ों की अपेक्षा के लिए परमेश्वर को बुद्धिमान होने का श्रेय देना चाहिए, जिसे हम समझ नहीं सकते हैं। अच्छे बच्चे अपने माता-पिता के आज्ञाओं पालन करते हैं, भले ही उनके आदेशों के कारण स्पष्ट न हों। परमेश्वर में सरल विश्वास और भरोसा हमें विश्वास दिलाएगा कि वह जानता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है और वह हमें कभी भी गलत रास्ते पर चलने नहीं देगा। यह हमारे लिए मूर्खता है,अपनी अज्ञानता में, परमेश्वर की अगुवाई पर अविश्वास करना,जबकि हम उसके सभी कारणों को पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं।

15 सभी आज्ञा उल्लंघनों के पीछे वास्तव में कौन है, और क्यों?

"जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। ... इसी से परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं" (1 यूहन्ना 3:8,10)। "शैतान... सारे संसार का भरमानेवाला है" (प्रकाशितवाक्य 12:9)।

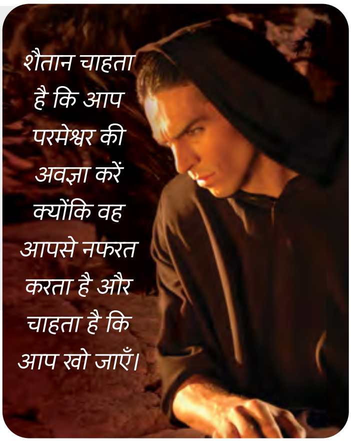

उत्तर: शैतान जिम्मेदार है। वह जानता है कि सभी आज्ञा उल्लंघन पाप है और यह कि पाप, दुःख, त्रासदी, परमेश्वर से अलगाव, और अंततः विनाश लाता है। अपनी घृणा में, वह हर व्यक्ति को आज्ञा उल्लंघन में ले जाने की कोशिश करता है। आप भी शामिल हैं। आपको तथ्यों का सामना करना होगा और निर्णय लेना होगा। आज्ञा उल्लंघन और खो जाना, या मसीह को स्वीकार करना और आज्ञा मानना और बचाया जाना। आज्ञाकारिता के बारे में आपका निर्णय मसीह के बारे में एक निर्णय है। आप उसे सत्य से अलग नहीं कर सकते, क्योंकि वह कहता है, "मैं... सत्य हूँ" (यूहन्ना 14:6)। "आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे" (यहोशू 24:15)।

16 बाइबल परमेश्वर की संतानों के लिए क्या शानदार चमत्कार की प्रतिज्ञा करती है?

“जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा” (फिलिप्पियों 1:6)।

उत्तर: परमेश्वर की स्तुति करो! वह वादा करता है कि जैसे उसने हमें नए जन्म देने के लिए एक चमत्कार किया, वह हमारे जीवन में आवश्यक चमत्कारों को भी जारी रखेगा (जैसा कि हम खुशी से उसका अनुसरण करते हैं) जब तक कि हम उसके राज्य में सुरक्षित न हो जाएँ।

17 क्या आप आज पूरी तरह, प्रेम से यीशु की आज्ञाओं का पालन करना आरम्भ करना चाहते हैं?

आपका उत्तर: ____________

आपके प्रश्नों के उत्तर

1. क्या कोई खो जाएगा जो सोचते हैं कि वे बचाए गए हैं?

उत्तर: हाँ! मत्ती 7:21-23 यह स्पष्ट करता है कि बहुत से लोग जो भविष्यवाणी करते हैं, प्रेत आत्माओं को बाहर निकालते हैं, और मसीह के नाम पर अन्य अद्भुत काम करते हैं, खो जायेंगे। ख्रीष्त ने कहा कि वे खो गए हैं क्योंकि वे "स्वर्ग में मेरे पिता की इच्छा" पर नहीं चलते हैं (पद 21)। जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से इनकार करते हैं वे अंत में झूठ पर विश्वास करेंगे (2 थिस्सलुनिकियों 2:11, 12) और, इस प्रकार, वे सोचते हैं कि वे बचाये गए हैं, परन्तु वे खो जायेंगे।

2. उन निष्ठावान लोगों के साथ क्या होगा जो वास्तव में सोचते हैं कि वे सही हैं जब की वे गलत होते हैं?

उत्तर: यीशु ने कहा कि वह उन्हें अपने सच्चे रास्ते पर बुलाएगा, और उसकी सच्ची भेड़ें सुनेंगी और उसका अनुसरण करेंगी (यूहन्ना 10:16, 27)।

3. क्या निष्ठा और उत्साह पर्याप्त नहीं हैं?

उत्तर: नहीं! हमें सही भी होना चाहिए। प्रेरित पौलुस निष्ठावान और उत्साही था जब उसने अपने धर्मांतरण से पहले मसीहियों को सताया करता था, परन्तु वह भी गलत था (प्रेरितों 22:3, 4; 26:9-11)।

4. उन लोगों के साथ क्या होगा जिन्होंने ज्योति प्राप्त नहीं की हैं?

उत्तर: बाइबल कहती है कि सभी को थोड़ी ज्योति अवश्य मिली है। "सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली है" (यूहन्ना 1:9)। प्रत्येक व्यक्ति का न्याय इस बात पर किया जाएगा कि वह कैसे उपलब्ध ज्योति के पीछे चलता/चलती है। रोमियों 2:14, 15 के अनुसार, यहाँ तक कि अविश्वासियों के पास भी कुछ ज्योति है और वे नियम का पालन भी करते हैं।

5. क्या किसी व्यक्ति के लिए यह सुरक्षित है की पहले वह परमेश्वर से किसी ऐसे चिन्ह की माँग पुष्टि करने के लिए करे कि वह आज्ञाकारिता चाहता है?

उत्तर: नहीं। यीशु ने कहा, "इस युग के व्यभीचारी लोग चिन्ह ढूँढते हैं" (मत्ती 12:39)। जो लोग बाइबल की सादी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करेंगे, वे किसी भी संकेत से आश्वस्त नहीं होंगे। जैसा कि यीशु ने कहा था, "जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो मरे हुए में से कोई भी जी उठे तौभी उसकी नहीं माननेंगे" (लूका 16:31)।

6. इब्रानियों 10:26, 27 यह बताती है कि अगर कोई व्यक्ति जो सच्चाई जानते हुए एक भी पाप करता है, तो वह खो जाता है। क्या ये सही है?

उत्तर: नहीं। कोई भी ऐसे पाप को स्वीकार कर सकता है और क्षमा किया जा सकता है। बाइबल यहाँ एक पाप की बात नहीं कर रही है, बल्कि पाप में एक निरंतरता और मसीह में आत्मसमर्पण करने से इनकार करने की बात करती है जबकि वह बेहतर जानता है। इस तरह के काम पवित्र आत्मा को दूर करते है (इफिसियों 4:30) और उस व्यक्ति के हृदय को तब कर कठोर कर देता जब तक कि उसे "सुन्न" होकर खो न जाए (इफिसियों 4:19)। बाइबल कहती है, "तू अपने दास को ढिठाई के पापों से बी बचाए रख; वे मुझ पर प्रभुता करने न पाएँ! तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूँगा" (भजन संहिता 19:13)।

अपनी टिप्पणियाँ या प्रश्न यहाँ लिखें

01

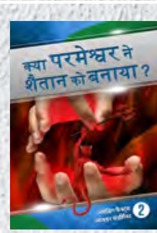

02

03

04

05

06

07

08

09

10

11

12

13

14

यह अध्ययन संदर्शिका 14 की शृंखला में से केवल एक है!

प्रत्येक पाठ आश्चर्यजनक तथ्यों से भरा हुआ है जो आपको और आपके परिवार को परिवर्तित कर देगा और आपको स्थायी उम्मीद दिलाएगा। एक भी ना चूकें।

अध्ययन संदर्शिका 01: क्या कुछ बचा है जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं?
अध्ययन संदर्शिका 02: क्या परमेश्वर ने शैतान को बनाया?
अध्ययन संदर्शिका 03: निश्चित मौत से बचाया गया
अध्ययन संदर्शिका 04: अंतरिक्ष में एक विशाल शहर
अध्ययन संदर्शिका 05: एक सुखद विवाह की कुंजी
अध्ययन संदर्शिका 06: पत्थर में लिखा है!
अध्ययन संदर्शिका 07: इतिहास का खोया हुआ दिन
अध्ययन संदर्शिका 08: परम उद्धार (यीशु मसीह का पुनरागमन)
अध्ययन संदर्शिका 09: शुद्धता और शक्ति!
अध्ययन संदर्शिका 10: क्या मृतक वास्तव में मृत हैं?
अध्ययन संदर्शिका 11: क्या शैतान नर्क का प्रभारी है?
अध्ययन संदर्शिका 12: शांति के 1000 वर्ष
अध्ययन संदर्शिका 13: परमेश्वर की नि:शुल्क स्वास्थ्य योजना
अध्ययन संदर्शिका 14: क्या आज्ञाकारिता विधिवादिता है?

सारांश पत्र

14

इस सारांश पत्र को हल करने से पहले कृप्या इस पाठ को पढ़ ले। अध्ययन संदर्शिका में सभी उत्तर पाए जा सकते हैं। सही उत्तर पर सही चिन्ह करें। कोष्ठकों में दी गई संख्या (?) सही उत्तरों की संख्या दर्शाती हैं। (√) फॉर्म भरने के लिए कृपया "**अडोबी रीडर**" का उपयोग करें।

1. वे लोग बचाए जाएँगे जो (1)

- ☐ मसीह के नाम पर दुष्टआत्माओं को बाहर निकालते हैं।
- ☐ मसीह से प्रेम करने का दावा करते हैं।
- ☐ परमेश्वर को स्वीकार करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

2. नीचे सूचीबद्ध कौन सी तीन चीजें मुझे सम्पूर्ण सत्य को प्राप्त करने का आश्वासन देती है? (3)

- ☐ अपने मनोचिकित्सक से पूछें।
- ☐ ज्योति के लिए प्रार्थना करें।
- ☐ प्रचारक जो कहते हैं वह करें।
- ☐ चर्च में उदारता से भेंट दें।
- ☐ खुद को दंडित करें।
- ☐ बेहतर शिक्षा प्राप्त करें।
- ☐ परमेश्वर से एक चिन्ह माँगें।
- ☐ बाइबल का अध्ययन करें।
- ☐ उस सत्य का पालन करूँ जिसे मैं अब समझता हूँ।

3. परमेश्वर मुझे उत्तरदायी ठहराता है (1)

- ☐ उस काम को करने के लिए जिसे करने की सलाह मेरे प्रचार देते हैं।
- ☐ अपने माता-पिता के पदचिन्हों पर चलने के लिए।
- ☐ उस ज्योति के लिए जो मेरे पास है और जिसे मैं पा सकता हूँ।

4. जब मैं नई सच्चाई पाता हूँ, तो मुझे (1)

- ☐ इसे अनदेखा करना चाहिए।
- ☐ प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक कि मैं इसे स्वीकार करने के लिए प्रभावित न हो जाऊँ।
- ☐ इसे तुरंत स्वीकार करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए।

5. परमेश्वर के आदेशों के लिए पूर्ण आज्ञाकारिता (1)

- ☐ किसी भी परिस्थिति में संभव नहीं है।
- ☐ विधिवादिता है और शैतान की ओर से है।
- ☐ केवल मसीह के द्वारा से संभव है।

6. जानबूझकर आज्ञा न मानना (1)

- ☐ अंधेरे और अनन्त विनाश की ओर ले जाता है।
- ☐ कलीसिया के उत्साही श्रमिकों के लिए ठीक है।
- ☐ यदि मैं ढीठ हूँ तो परमेश्वर द्वारा इसे अनदेखा किया जाता है।

7. परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम (1)

- ☐ आज्ञाकारिता से बेहतर है।
- ☐ आज्ञाकारिता को अनावश्यक बनाता है।
- ☐ मेरे लिए खुशी से उसकी आज्ञाओं का पालन करने का कारण बनता है।

8. सच्ची मसीही स्वतंत्रता का अर्थ है (1)

- ☐ अपनी मनमानी करने का अधिकार।
- ☐ परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघनकरने का अधिकार।
- ☐ आज्ञा उल्लंघन और शैतान की दासता से स्वतंत्रता।

9. जब सत्य का एक बिंदु स्पष्ट हो जाता है परन्तु मुझे समझ में नहीं आता कि परमेश्वर को मुझे इसका पालन करने की आवश्यकता क्यों है, मुझे (1)

- ☐ कारण स्पष्ट होने तक प्रतीक्षा करना चाहिए।
- ☐ सत्य के उस बिंदु को अस्वीकार करना चाहिए।
- ☐ इसे स्वीकार करना चाहिए और परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए।

अगले पृष्ठ पर जारी

10. सभी आज्ञा उल्लंघन के लिए वास्तव में कौन जिम्मेदार है? (1)

- ☐ सरकार।
- ☐ मेरे माता-पिता, जिन्होंने मुझे गलत प्रशिक्षिण दिया।
- ☐ शैतान।

11. आज्ञाकारिता क्यों जरूरी है? (1)

- ☐ क्योंकि परमेश्वर मुझ से बड़ा है, और मैं उससे डरता हूँ।
- ☐ परमेश्वर को गुस्सा होने से रोकने के लिए।
- ☐ क्योंकि मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ और मसीही व्यवहार के लिए उसकी नियमों का पालन करना चाहता हूँ।

12. परमेश्वर सब आज्ञा उल्लंघन करने वालों को अभी क्यों नष्ट नहीं कर देता है? (1)

- ☐ वह डरता है।
- ☐ वह दुष्टता को विकसित होते देखने का आनंद लेता है।
- ☐ वह तब तक इंतजार कर रहा है जब तक कि सभी उसके प्रेम और न्याय से पूरी तरह से आश्वस्त न हो जाएँ।

13. क्या आपको यह जानकर खुशी होती है, कि यीशु न केवल उन लोगों को नया जन्म देता है जो उसे स्वीकार करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं, परन्तु वह अपने राज्य में सुरक्षित होने तक उनके जीवन में आवश्यक चमत्कार भी जारी रखता है?

- ☐ हाँ।
- ☐ नहीं।

उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित करें!

AMAZING FACTS India

नामांकित होने के लिए अपना नाम, ईमेल और फोन नंबर दर्ज करें। अपनी अगली मुफ्त अध्ययन मार्गदर्शिका प्राप्त करने के लिए “जमा करें” पर क्लिक करें।

आपका नाम :			
आपका ईमेल :			
फोन नंबर :			
आपका पता :			
शहर जिला :		*राज्य :*	
पिन:		*आयु वर्ग :*		*लिंग :*	

जमा करें

अपनी संपर्क जानकारी अपडेट करें

www.AmazingFacts.org • www.AmazingFactsIndia.org • HindiBibleSchool@AFTV.in
© 2007, 2020 Amazing Facts International • All Rights Reserved • Printed in India